2

काव्य-लक्षण

1. संस्कृत-मत

1. **अग्निपुराण**—अग्निपुराण के अनुसार—"अभीष्ट अर्थ को संक्षेप में प्रकट करने... अविच्छिन्न पदावली, अलंकार-गुण युक्त हो व दोषों से रहित हो, काव्य है।

संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।
काव्यं स्फुरदलंकारं गुणवदोष वर्जितम्॥ —[अग्निपुराण]

2. **भरतमुनि**—

"मृदुललित-पदाढ्यं गूढ़-शब्दार्थहीनम्
जनपद-सुखबोध्यं युक्तिमन्नृत्ययोज्म्॥
बहुकृत-रसमार्ग सन्धि-सन्धानयुक्तम्,
स भवति शुभकाव्यं नाटकं-प्रेक्षकाणाम्॥"

[**अर्थात्**-भरतमुनि ने मृदु लालित्य, गूढ़ शब्दार्थहीनता, सर्वबोधता, युक्ति अथवा तर्कसंगता, नृत्य-योजना, भाँति-भाँति रस प्रवाहिनी तथा कथानक संधियों की पूर्ण निर्वाहात्मकता को शुभ काव्य कहा है।]

3. **भामह**—"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।"

[**अर्थात्**—शब्द और अर्थ से युक्त वाक्य ही काव्य है।] भामह की यह मान्यता है कि ऐसा कोई शब्द है, न अर्थ, न न्याय, न कला है, जो काव्य का अंग न बन सके।

4. **दण्डी**—दण्डी के अनुसार काव्य का शरीर तो इष्ट अर्थ से युक्त पदावली होता है।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्नापदावली। -[काव्यादर्श]

Scanned with CamSc

5. वामन—वामन ने 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में रीति को काव्य की आत्मा मानते हुए गुण व अलंकार से युक्त शब्दार्थ को काव्य की संज्ञा दी है-

1. **स दोष-गुणाऽलंकार हानादानाभ्यम्।**

   वामन ने अलंकार को काव्य का सारभूत तत्त्व माना है। अलंकार का अर्थ है—सौंदर्य और सौंदर्य का अस्तित्व दोषों के अभाव एवं गुणों के सद्भाव पर निर्भर करता है-

2. **काव्यं ग्राह्यमलंकरात। सौंदर्यम्लंकारः**

3. **स दोष गुणलंकार तद्दोषौ हानादानाभ्याम।**

4. **काव्य शब्दोऽयं गुणालंकार संस्कृतयोःशब्दार्थयोः वर्तते।**

6. आनंदवर्द्धन—

1. **शब्दार्थ, शरीरं तावत्काव्यम्। काव्यस्यात्मा ध्वनि।**

2. **सहृदयहृदयाहलादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्॥**

[**अर्थात्**-शब्दार्थ रूपी शरीर काव्य है और ध्वनि काव्य की आत्मा है।]

7. भोजराज—

"निर्दोषं गुणवत्काव्यमलंकारैलंकृतम्।
रसान्वितं कविं कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिञ्च विन्दति॥" [सरस्वती कंठाभरण]

[**अर्थात्**-दोषमुक्त, गुणयुक्त, अलंकृत सरस काव्य कीर्ति और सुख प्रदाता है।]

8. रुद्रट—"ननु शब्दार्थे काव्यम्"। -[**काव्यालंकार**]

[**अर्थात्**-शब्द और अर्थ का मेल काव्य है।]

9. कुंतक—

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यम् तद्विदाह्लादकारिणौ"

[**अर्थात्**-आह्लादक सुव्यवस्थित बंध में बँधा वक्र व्यापारशाली शब्दार्थ काव्य है।]

10. **मम्मट**—"शब्दार्थौसगुणावनलंकृति पुनः क्वापि"। -[**काव्यप्रकाश**]

[**अर्थात्**—दोषरहित, गुणसहित और यथासंभव अलंकार युक्त शब्दार्थ काव्य है। कन्हैयालाल पोद्दार ने मम्मट की काव्य-परिभाषा को सर्वाधिक महत्त्व दिया है।]

11. **वाग्भट्ट**—

साधुशब्दार्थ संदर्भ गुणलंकार भूषितम्।
स्फुटरीतिरसोपेतं काव्यं कुर्वीत कीर्तये॥

Scanned with CamSc

[**अर्थात्**-रीति, रस, अलंकार, गुणयुक्त शब्दार्थ को काव्य कहते हैं।
है-''गुणालंकार रीति रसोपेत:।'']

12. राजशेखर —''शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेविद्या साहित्य विद्या।''

13. जयदेव—

1. **''अंगीकरोति य: काव्यं शब्दार्थवनलंकृति।''**

   असौ न मन्यते कस्यादनुएमनलंकृति।-[चंद्रलोक]

   अर्थात्-जो विद्वान् अलंकार से हीन शब्द और अर्थ को काव्य
   अग्नि को भी अनुष्ण (शीतल) क्यों नहीं मानते हैं? जयदेव ने
   काव्य-लक्षण विषयक मान्यता के विरोध में यह कहा था।

2. **निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूषिता।**

   सालंकाररसानेकवृत्ति वाक्काव्यनामवाक्।।

   [**अर्थात्**-दोषरहित तथा रीति, गुण, अलंकार, रस, वृत्ति इत्यादि
   से युक्त वाक्य ही काव्य है।]

14. हेमचंद—

'अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शबदाथौ काव्यम्।—[काव्यानुशासन

[**अर्थात्**—दोष रहित, गुण व अलंकार सहित शब्दार्थ काव्य है।']

15. विद्यानाथ—

गुणलंकार शब्दार्थौ दौषवर्जितौ काव्यम्।—[प्रतापरुद्र, यशोभूषण

[**अर्थात्**—शब्द अर्थ से युक्त वह काव्य है, जो गुण और अलंकार से

16. पंडित जगन्नाथ—

''रमणीयार्थप्रतिपादक: शब्द: काव्यम्''।—[रसगंगाधर]

[**अर्थात्**—रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्द काव्य है। सा
की दृष्टि में पं. जगन्नाथ का परिभाषा सर्वोत्कृष्ट है।]

2. मध्यकालीन हिंदी मत

1. **तुलसीदास**—

कीरति (कीर्ति), भनिति (कविता), भूति (संपत्ति), भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

कीर्ति, कविता और संपत्ति वही श्रेष्ठ है, जो गंगा के समान सबका हि
[

2. **केशवदास**—

जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न बिराजई कविता वनिता मित्त।।

[जिसप्रकार उच्च जाति की सुलक्षणी, सुंदर वर्णवाली स्त्री आभूषणों के बिना सुशोभित नहीं होती उसी प्रकार काव्य की शैली और भाव उच्चकोटि के होने पर भी अलंकारों के बिना प्रभावशाली नहीं होता।]

3. **चिंतामणि**—

''सगुण अलंकारनसहित, दोषरहित जो होई।

शब्द अर्थ ताको कबित, कहत विबुध सब कोई॥''-

[दोषरहित, गुणयुक्त, अलंकारवान् तथा शब्द-अर्थ सहित काव्य है। मम्मट तथा विश्वनाथ की भाँति इनका मत है।]

4. **देव**—

शब्द सुमति मुख ते कढ़ै, लै पद वचननि अर्थ।

छन्द, भाव, भूषण, सरस, सो कहि काव्य समर्थ।।

[अर्थात् छंद, भाव, अलंकार और सरसता युक्त वे शब्द जो अर्थ अभिव्यक्ति में सक्षम हों, काव्य है।]

5. **कुलपति**—

1. जग ते अद्भुत सुख सदन, शब्दरु अर्थ कवित्त।
   यह लच्छन मैंने कियो समुझि ग्रन्थ बहु चित्त॥
2. दोषरहित अरु गुन सहित, कछुक अल्प अलंकार।
   सबद अरथ सो कबित है, ताको करो विचार।।

[1. अलौकिक आनंद देनेवाले शब्द और अर्थ को काव्य कहते हैं।]

[2. दोषरहित, गुणयुक्त, अल्प अलंकारयुक्त शब्दार्थ काव्य है।]

6. **श्रीपति**—

1. शब्द अर्थ बिन दोष गुन अलंकार रसवान।
   ताको काव्य बखानिए श्रीपति परम सुजान।।
2. यदपि दोष बिनु गुन सहित, अलंकार सो लीन।
   कविता वनिता छवि नहीं, रस बिन तदपि प्रवीन।।-**[काव्य सरोज]**

Scanned with CamSc

7. **सोमनाथ**—सगुन पदारथ दोष बिनु, पिंगल मत अविरुद्ध।
भूषण-सुत-कवि-कर्म को, सो कवित्त कहि सुद्ध।।-[**रसपीयूषनिधि**]
[काव्य वह कवि कर्म है, जिसमें शब्द और अर्थ सगुण, दोषरहित और (पिंगल) के अनुसार हो। काव्य को कवि-कर्म तथा काव्य में छंद का ... करनेवाले प्रथम आचार्य सोमनाथ हैं।]

8. **भिखारीदास**—जाने पदारथ भूषण मूल, रसांग-परांगह्न मैं मती छाकी।
सो धुनि अर्थह्न वाक्यह्न ले गुन, शब्द अलंकृत सों रति पाकी।।-[काव्य नि...
[काव्य वह शब्दार्थ है, जो अलंकार, ध्वनि, रस और अलंकारों से युक्त हो...

9. **प्रतापसाहि**—1. व्यंग्य जीव कहि कवित्त को हृदय सो धुन पहिचानि।
2. व्यंग्य जीव है कवित्त में, शब्द अर्थ गति अंग।
सोइ उत्तम काव्य है, वरनै व्यंग्य प्रसंग।--[**काव्यविलास**]

10. **ठाकुर**—पंडित और प्रवीनन को जोई, चित्त हरै सो कवित्त कहावे।
[कविता वह है जो पंडित और मर्मज्ञों प्रवीणों का चित्त हर ले।]

3. आधुनिक हिंदी मत

- **मैथिलीशरण गुप्त**-केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।
- ज्ञानराशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य।-**महावीर प्रसाद द्विवेदी**
- अंतःकरण की वृत्तियों के चित्त का नाम कविता है।-**महावीर प्रसाद** द्विवेदी
- **रामचंद्र शुक्ल** ने काव्य की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। देखें-
- जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती है, उसे कविता कहते हैं।-[**कविता** क्या है?]
- कविता जीवन और जगत् की अभिव्यक्ति है।-[**कविता क्या है?**]
- कविता मनुष्य के हृदय को स्वार्थ से बंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठा... लोकसामान्य भावभूमि पर ले जाती है।-[**कविता क्या है?**]
- सच्ची कविता किसी वाद को लेकर नहीं चलती, जगत् की अभिव्यक्ति को ले... चलती है। —[**चिन्तामणि, भाग द्वितीय, पृ०-73; काव्य में** रहस्यवाद]
- काव्य सर्वथा स्वप्न के रूप की वस्तु नहीं है।— [**रसात्मक बोध के** विविध रूप]
- अभिव्यंजना कला या काव्य है। —[**चिन्तामणि, भाग द्वितीय,** पृ०-11...]
- काव्य शब्द-व्यापार है। —[**रसात्मक बोध के विविध रूप**]

Scanned with CamScanner

- काव्य-क्षेत्र में किसी वाद का प्रचार धीरे-धीरे उसकी सारसत्ता ही चर जाता है। —**[साहित्य और व्यक्ति वैचित्र्यवाद]**
- शब्द-काव्य की सिद्धि के लिए वस्तु-काव्य का अनुशीलन परम आवश्यक है। —**[रसात्मक बोध के विविध रूप]**
- हृदय प्रसार का स्मारक-स्तम्भ काव्य है। —**[कविता क्या है?, रस-मीमांसा]**
- कविता तो भाव-प्रसार द्वारा कर्मण्य के लिए कर्म क्षेत्र का और विस्तार कर देती है। —**[कविता क्या है?]**
- काव्य का विषय सदा विशेष होता है, सामान्य नहीं; वह व्यक्ति सामने लाता है जाति नहीं। —**[साहित्य और व्यक्ति वैचित्र्यवाद]**
- कविता अपनी मनोरंजन शक्ति द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त रमाये रहती है। —**[कविता क्या है?]**
- कविता का सम्बन्ध ब्रह्म की व्यक्त सत्ता से है, चारों ओर फल गोचर जगत् से है, अव्यक्त सत्ता से नहीं। —**[साहित्य और व्यक्ति वैचित्र्यवाद]**
- अनूठी से अनूठी उक्ति काव्य तभी हो सकती है जबकि उसका सम्बन्ध कुछ दूर का ही सही, हृदय के किसी भाव या वृत्ति से होगा। —**[काव्य में रहस्यवाद]**
- काव्य-क्षेत्र अजायबखाना या नुमाइशगाह नहीं है। —**[चिन्तामणि, भाग द्वितीय, पृ०-10]**
- वाच्यार्थ ही काव्य होता है, व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ नहीं। —**[चिन्तामणि, भाग द्वितीय, पृ०-180)**
- काव्य में अर्थग्रहण-मात्र से काम नहीं चलता, बिम्बग्रहण अपेक्षित होता है। यह बिम्बग्रहण निर्दिष्ट, गोचर और मूर्त विषय का ही हो सकता है। —**[कविता क्या है?]**
- कविता के साथ 'आनन्द' शब्द जुड़ा रहने से उसे विलास की सामग्री न समझना चाहिए। —**[रस-मीमांसा, पृ० 80]**
- नाद-सौन्दर्य से कविता की आयु बढ़ती है। —**[कविता क्या है?]**
- भिन्न-भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं। —**[कविता क्या है?]**
- काव्य का काम है कल्पना में बिम्ब या मूर्तभावना उपस्थित करना, बुद्धि के सामने कोई विचार लाना नहीं। —**[साहित्य और व्यक्ति वैचित्र्यवाद]**
- मनोमय कोश ही प्रकृत काव्यभूमि है। —**[काव्य में रहस्यवाद, पृ० 80]**
- कविता मनुष्य को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है।
- काव्य-कौतुक नहीं है, उसका उद्देश्य गम्भीर है। —**[काव्य में प्राकृतिक दृश्य]**

Scanned with CamSc

- कविता-देवी के मन्दिर ऊँचे खुले और विस्तृत पुनीत हृदय है। —[क... है?]
- स्वप्न और जागरण काव्य के दो पक्ष हैं, इन दोनों पक्षों का सामंजस्य का... उत्कर्ष है। —[कविता क्या है?]
- कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अन्तःप्रकृति का सामंजस्य घटित... उसकी भावात्मक सत्ता के प्रकार का प्रसार करती है। —[कविता क्या...
- कविता अभिव्यंजना है, वह अभिव्यक्ति या विकास को लेकर चलती... **[चिन्तामणि, भाग 4, रस-मीमांसा द्वितीय, पृ०-202]**
- **गुलाब राय**—(i) काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रति... की श्रेय को प्रेय देनेवाली अभिव्यक्ति है।-**काव्य के रूप**, पृ. 24

  (ii) काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की क... ढाँचे में ढली हुई श्रेय की प्रियरूपता प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।
- **डॉ. श्यामसुंदर दास**—काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद या चम... सृष्टि करे।
- **जयशंकर प्रसाद**—(1) काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है... संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय र... ज्ञानधारा है। (2) कवित्व वर्णमय चित्र है जो स्वर्गीय भावपूर्ण चित्र गाया क...
- **डॉ. रामकुमार वर्मा**—कविता-कवि-विशेष की भावनाओं का चित्रण है... चित्रण इतना ठीक है कि उससे वैसी ही भावनाएँ किसी दूसरे के हृदय में... होती हैं।*
- **महादेवी वर्मा**—कविता हमारे व्यष्टि सीमित जीवन को समष्टि जीवन त... के लिए व्यापक सत्य को अपनी परिधि में बाँधती है।
- **पंत**—कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है। कविता हमारे प्राणों का...
- **दिनकर**— (i) कविता मनोरंजन नहीं आत्मानुसंधान का उन्मेष है।

  (ii) कविता न तो कोमल भाषा न गेय छंद, न कोरी भावुकता में है। वह म... विशिष्ट मनोदशा का प्रतिफल है।- **[सीपी और शंख]**

नोट- रामदहिन मिश्र, भगीरथ मिश्र ने डॉ. रामकुमार वर्मा की उक्त परि... महादेवी का बताया है, जो गलत है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'साहित्य-सम... शीर्षक कृति [पृ. 11] में काव्य की उक्त परिभाषा दी है।

Scanned with CamSc

(iii) कविता कवि की आत्मा का आलोक है, उसके हृदय का रस है, जो बाहर की वस्तु का अवलंब लेकर फूट पड़ती है।

- **अज्ञेय**—काव्य आत्मा की अभिव्यक्ति न होकर कला-साधना है।
- **प्रेमचंद**—साहित्य जीवन की आलोचना है। चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानी या काव्य के, उसमें हमारे जीवन की व्याख्या और आलोचना होनी चाहिए।
- **हजारी प्रसाद द्विवेदी**—(1) जो वाग्जाल मुनष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से न बचा सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न कर सके, जो उसके हृदय को परदु:खकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में संकोच होता है। (2) साहित्य मनुष्य के अंतर का उच्छलित आनंद है। (3) मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।
- **डॉ. नगेंद्र**—(1) आत्माभिव्यक्ति ही वह मूल है जिसके कारण कोई व्यक्ति साहित्यकार और उसकी कृति साहित्य बन पाती है। (2) रमणीय अनुभूति उक्ति वैचित्र्य और छंद-इन तीनों का समंजित रूप ही कविता है। (3) रसात्मक शब्दार्थ ही काव्य है और उसकी छंदोमयी विशिष्ट विधा कविता है।
- **धूमिल**-(i) कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है। (ii) कविता के शब्दों के जरिए कवि अपने वर्ग के आदमी को समूह की साहसिकता से भर देता है।

4. अन्य मत

- **प्लेटो**—(1) ईश्वर के सत्य की अनुकृति यह संसार है और इस संसार का अनुकरण ही काव्य है। काव्य अनुकृति की अनुकृति है। (2) कविता अनुकरण का अनुकरण है।
- **अरस्तू**—(1) काव्य की प्रकृति अनुकृति है। कविता एक कला है। कला प्रकृति का अनुकरण है। (2) भाषा के माध्यम से होने वाली अनुकृति ही काव्य है। (3) काव्य मानव के आंतरिक कार्यव्यापारों की अनुकृति है।
- **कॉलरिज**—सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम कविता है। (Poetry is the best words in their best order)
- **वर्ड्सवर्थ**—(i) कविता शांति के क्षणों में स्मरण किए गए प्रबल मनोवेगों अथवा सशक्त अनुभूतियों का स्वाभाविक प्रवाह या सहज उच्छलन है। (Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings) (ii) कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है।
- **ड्राइडन**—काव्य रागात्मक और छंदोबद्ध भाषा के माध्यम से प्रकृति का अनुकरण है।
- **जॉनसन**—(1) कविता छंदोमयी रचना है। (2) कविता वह कला है जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनंद संयोजन करती है।

Scanned with CamSc

- **पी.बी. शैली**—(1) काव्य सर्वाधिक सुखी और श्रेष्ठतम हृदयों के श्रे क्षणों का लेखा-जोखा होता है। (2) विषादमय क्षणों की अभिव्यक्ति कवि (3) काव्य कल्पना की अभिव्यक्ति है।
- **इलियट**—कविता भाव का स्वच्छंद प्रवाह नहीं, भाव से पलायन है, व्य की अभिव्यक्ति नहीं, उससे मुक्ति का नाम है।
- **मैथ्यू आर्नल्ड**—सत्य और काव्य सौंदर्य के उपबंधों के अधीन जीवन की आ का नाम काव्य है। (Poery is the bottom of criticism) काव्य अपने मू में जीवन की आलोचना है। मैथ्यू ऑर्नल्ड ने अपने एक निबंध 'Essa Wordsworth' में कविता को जीवन की व्याख्या कहा था। **स्रोत-काव्य के : गुलाबराय, पृ. 21**
- **विल्सन**—भावनाओं से रंजित बुद्धि काव्य है। (Poetry is the inellect co by feelings)
- **मिल्टन**—"सादगी, ऐन्द्रियता और रागात्मकता कविता के लिए अनिवार्य
- **डेनिस**-"काव्य भावात्मक और विस्तृत भाषण के द्वारा प्रकृति की अनुकृ
- **कार्लाइल**—"काव्य संगीतमय विचार है (Poetry we will call m thought)।"
- **हडसन**—(1) काव्य संगीत है। (2) भाव व कल्पना के द्वारा जी व्याख्या काव्य है। (Poetry is articulate music)
- **एडगर एलन पो**-सौंदर्य की लयात्मक सृष्टि काव्य है।
- **मैकाले**—"काव्य से हमारा तात्पर्य उस कला से है, जो शब्दों के म माध्यम से कल्पना का मायाजाल बुनती है।"
- **जॉन स्टुअर्ट**—"कविता क्या है? यह तो केवल वे विचार और शब्द

Scanned with CamSc